ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

# आर्य प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)
वर्ष-9 अंक 4, मास मार्च-अप्रैल 2019 विक्रमी संवत् 2075, दयानन्दाब्द 195
सृष्टि संवत् 1960853119
दूरभाष: 011-25760006 Website - www.aryasamajrajendernagar.org सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

## ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना क्यों की?

आर्यसमाज एक सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन है। यह वैदिक सिद्धान्तों से देश की राजनीति को भी दिशा देने में समर्थ है। वेद, मनुस्मृति, रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थों में राजा के कर्तव्यों सहित एवं समाज एवं देश की सुव्यवस्था संबंधी वैदिक विधानों की भी चर्चा है। आर्यसमाज की सभी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बिन्दु व प्रेरणा स्रोत वेद है। वेद क्या हैं? वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की प्रेरणा से चार आदि ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया गया ज्ञान है। यह ज्ञान ईश्वर ने उन चार ऋषियों के निजी उपयोग के लिए ही नहीं अपितु उन्हें अन्य सभी मनुष्यों का प्रतिनिधि बनाकर दिया था जिससे वह सभी लोगों को वेदों का ज्ञान करा सकें और उन्होंने ऐसा किया भी। वेद और धर्म दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। वेद की सभी शिक्षायें सत्य हैं और सभी मनुष्यों को इसका पालन करना अपनी ऐहिक व पारलौकिक उन्नति के लिए आवश्यक है। वेदों की शिक्षाओं का पालन ही धर्म कहा जाता है। वेदों में सत्य का व्यवहार करने व परहित के कार्यों में जीवन व्यतीत करने की आज्ञा है। यही मनुष्य का धर्म भी है। वेद मनुष्यों में भौगोलिक कारणों, रंग-रूप व अन्य किसी प्रकार से भी भेद नहीं करता। उसके लिए सभी मनुष्य काले, गोरे, अगड़े व पिछड़े, स्त्री व पुरुष समान हैं। सबको समान रूप से ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदाध्ययन, वेदाचरण व अन्य सभी अधिकार अपनी गुण, कर्म, स्वभाव व योग्यता के अनुसार प्राप्त हैं। महाभारतयुद्ध के बाद वेदों का यथार्थ ज्ञान अप्रचलित होकर विलुप्त प्रायः हो गया था। इस कारण देश व संसार में अंधकार फैला और अनेक मत-मतान्तर उत्पन्न हुए जो अधिकांशतः अविद्या से ग्रस्त थे। आज संसार में जितने भी मत प्रचलित हैं उनमें वेद व सनातनी पौराणिक मत के अतिरिक्त मुख्यतः ईसाई व इस्लाम मत का प्रचार अधिक है। ईसाई व इस्लाम मत से पूर्व बौद्ध व जैन मत भी प्रचलन में आये और आज भी इनका अस्तित्व व प्रचार है। बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम आदि मत इन मतों से 1.96 अरब वर्ष पूर्व आरम्भ व प्रचलित वेद धर्म से प्रेरणा व सहायता नहीं लेते। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि अब इन मतों की स्थापना व आरम्भ हुआ, उस समय यरुशलम, मक्का मदीना आदि स्थानों पर वेदों का प्रचार व जानकारी लोगों को नहीं थी। ऐसा न होने पर भी वेदों की बहुत सी शिक्षायें इन मतों में पाई जाती हैं। बौद्ध और जैन नास्तिक मत यद्यपि लगभग 2500 वर्ष पूर्व भारत में अस्तित्व में आये परन्तु उनके समय वेदों के नाम पर यज्ञों में जो पशु हिंसा प्रचलित थी, उनका इन मतों ने विरोध किया। इस विरोध के कारण ही ये भी वेदों से प्रेरणा नहीं लेते। यह बात अन्य है कि वेदों के आधार पर प्रचलित मोक्ष शब्द इन्होंने वैदिक परम्परा से ही लिये हैं। इन सभी मतों से पूर्व व महाभारत काल के बाद वेदों की कुछ सत्य व कुछ असत्य मान्यताओं पर आधारित सनातन धर्म प्रचलित हुआ जो शुद्ध वैदिक धर्म से कुछ विकृत मत था। बाद में पुराण आदि की रचना होने से इसमें और अनेक वेदविरुद्ध बातें प्रचलित हुई।

समय व्यतीत होने के साथ सनातनी पौराणिक मत में अनेक अज्ञान की बातें, अन्धविश्वास एवं कुरीतियां आदि उत्पन्न हो गई। इनके परिणाम से ही इस मत के अनुयायी अवैदिक मान्यताओं व परम्पराओं अवतारवाद, बहुदेवतावाद, मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, जन्मना जातिवाद आदि को मानने लगे जो वर्तमान में भी विद्यमान हैं। महाभारत काल से पूर्व गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी जिसका विकृत रूप जन्मना जातिवाद अस्तित्व में आया। इस जन्मना जातिवाद व वर्णव्यवस्था के विकृत रूप ने समाज में अव्यवस्था को जन्म दिया जिससे समाज व

-शेष अंक 3 पर

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

# सम्पादकीय

– आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
मो : 9810884124

महर्षि दयानन्द ने 10 अप्रैल, सन् 1875 के दिन मुम्बई के गिरगांव मोहल्ले में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। वर्तमान में यह आर्यसमाज काकड़वाडी के नाम से प्रसिद्ध है। आर्यसमाज अन्य धार्मिक संस्थाओं की तरह कोई संस्था या प्रचलित मतों की भांति कोई नवीन मत नहीं था। यह एक धार्मिक व सामाजिक आन्दोलन था जिसका उद्देश्य महाभारत काल के बाद वैदिक धर्म में आई अशुद्धियों, अज्ञान, अन्धविश्वासों व कुरीतियों आदि का संशोधन कर, वेद के आदर्श **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** वा सत्य वैदिक मत का प्रचार कर उसको देश देशान्तर में प्रतिष्ठित करना था। यह सुविदित है कि जब महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज की स्थापना की, उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था। महाभारत काल के बाद लगभग 5,000 वर्षों से लोग अज्ञान, अन्धविश्वासों सहित गुलामी का जीवन बिताने के कारण वह कुरीतियों के एक प्रकार से अभ्यस्त हो गये थे। बहुत से लोगों को महर्षि दयानन्द के सुधार व असत्य मतों के खण्डन के पीछे मनुष्य व देशहित की छिपी भावना के दर्शन नही होते थे। उस समय की अवस्था के विषय में यह कह सकते हैं कि अधिकांश देशवासियों के ज्ञान चक्षु अति मन्द दृष्टि के समान हो गये थे जिसमें उनको अपना स्पष्ट हित भी दिखाई देना बन्द हो गया था और वह एक प्रकार से विनाशकारी मार्ग, अन्धविश्वास व कुरीतियों के मार्ग, पर चल रहे थे। उनमें से अधिकांश अपनी अज्ञानता व कुछ अपने स्वार्थों को बनायें व बचायें रखने के लिए उनका विरोध करते थे। ऋषि दयानन्द के विचारों व मान्यताओं में स्वदेश भक्ति वा स्वदेश प्रेम की मात्रा भी विशेष उन्नत व प्रखर थी। इस कारण अंग्रेज भी आन्तरिक व गुप्त रूप से उनके विरोधी व शत्रु थे। ऐसी परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने व्यक्ति, समाज व देश के सुधार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। इस स्थापना के समय ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज से जुड़ने वाले लोगों को एक चेतावनी भी दी थी।

महर्षि दयानन्द द्वारा इस अवसर पर कहे गये शब्द लिखित रूप में उपलब्ध हैं। वह स्थापना के समय उपस्थित सभी लोगों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि **'आप यदि समाज (बनाकर इस) से (मिलकर सामूहिक) पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हों, (तो) समाज कर लो (बना लो), इस में मेरी कोई मनाई नहीं। परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे (अव्यवस्था) हो जाएगी। मैं तो मात्र जैसा अन्य को उपदेश करता हूं वैसा ही आपको भी करूंगा और इतना लक्ष्य में रखना कि कोई स्वतन्त्र मेरा मत नहीं है। और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूं। इससे यदि कोई मेरी गलती आगे पाइ जाए, युक्तिपूर्वक परीक्षा करके इसको भी सुधार लेना। यदि ऐसा न करोगे तो आगे यह भी एक मत हो जायेगा, और इसी प्रकार से बाबा वाक्यं प्रमाणं करके इस भारत में नाना प्रकार के मत–मतान्तर प्रचलित होके, भीतर भीतर दुराग्रह रखके धर्मान्ध होके (आपस में) लड़के नाना प्रकार की सद्विद्या का नाश करके यह भारतवर्ष दुर्दशा को प्राप्त हुआ है इसमें, यह (आर्यसमाज) भी एक मत बढ़ेगा। मेरा अभिप्राय तो है कि इस भारतवर्ष में नाना प्रकार के मतमतान्तर प्रचलित हैं वे सब वेदों को मानते हैं, इस से वेदशास्त्ररूपी समुद्र में यह सब नदी नाव पुनः मिला देने से धर्म ऐक्यता होगी और धर्म ऐक्यता से सांसारिक और व्यवहारिक सुधारना होगी और इससे कला कौशल्यादि सब अभीष्ट सुधार होके मनुष्यमात्र का जीवन सफल होके अन्त में अपने धर्म (के) बल से अर्थ काम और मोक्ष मिल सकता है।'**

महर्षि धर्म संशोधक ऋषि व समाज सुधारक महामानव थे। उनसे पूर्व उत्पन्न किसी धर्म प्रवर्तक वा समाज संशोधक ने अपने विषय में ऐसे उत्तम विचार व्यक्त नहीं किये। यदि किये भी होंगे तो उनके शिष्यों द्वारा उनका रक्षण नहीं किया गया। इन विचारों को व्यक्त करने से ऋषि दयानन्द एक अपूर्व निःस्वार्थ व निःपक्ष महात्मा तथा आदर्श धर्म संशोधक समाज सुधारक ऋषि सिद्ध होते हैं। ऋषि दयानन्द ने जो आशंका व्यक्त की थी उसका प्रभाव हम आर्यसमाज के संगठन में देख सकते हैं। आर्यसमाज का संगठन गुटबाजी व अयोग्य लोगों के पदों पर प्रतिष्ठित होने से त्रस्त है। सभाओं में भी झगड़े देखने को मिलते हैं। इन्हें समाप्त करने के झुट पुट प्रयत्न भी होते हैं परन्तु सफलता नहीं मिलती। इसका मूल कारण अविद्या है जिसे दूर नही किया जा रहा है। यही कारण है कि आर्यसमाज के सामने मनुष्य के जीवन व चरित्र के सुधार सहित जीवन निर्माण का जो महान लक्ष्य था, वह पूरा न हो सका। हम आर्यसमाज के सभी अधिकारियों व सदस्यों को ऋषि दयानन्द के उपर्युक्त विचारों पर ध्यान देने व विचार करने का अनुरोध करते हैं। यदि हमने ऋषि के सन्देश को समझ कर, अपनी अविद्या को हटाकर, उसको आचरण में ले लिया तो पूर्व की भांति आर्यसमाज सहित देश का कल्याण हो सकता है।

**आर्य प्रेरणा**
**के सभी पाठकों को**
**विक्रम संवत् 2076 की**
**हार्दिक शुभ कामनायें।**
**यह भारतीय नववर्ष आप**
**सबके लिए सुख**
**समृद्धिदायक और सकल**
**सौभाग्य विधायक हो।**
**–सम्पादक**

- अंक 1 का शेष

देश कमजोर हुआ और यवनों व मुस्लिमों का गुलाम भी हुआ। इस गुलामी में मुख्य कारण मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, धार्मिक अन्धविश्वास, मिथ्या व अज्ञानपूर्ण परम्परायें ही मुख्य थीं। ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में भारत अधिकांशतः अंग्रेजी राज्य बन चुका था। ऐसे समय उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देश के धार्मिक व सामाजिक जगत में वेद विद्या से देदीप्यमान महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। महर्षि दयानन्द दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा के सुयोग्य शिष्य थे। गुरु ने उन्हें देश व समाज से अज्ञान दूर कर वेद मत स्थापित करने की प्रेरणा दी थी। इस परामर्श को महर्षि दयानन्द जी ने स्वीकार किया था और सन् 1863 में मथुरा से आगरा आकर धर्म प्रचार का कार्य करना आरम्भ कर दिया था। आगरा में रहते हुए वह पौराणिक मान्यताओं का खण्डन करते थे। उन्होंने वहां करते हुए सन्ध्या नाम की एक लघु पुस्तक लिखकर उसे प्रकाशित कराया और उसका वितरण कराया। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने सार्वजनिक जीवन में वेद और आर्ष साहित्य के आधार पर निश्चित सत्य मान्यताओं के प्रचार व प्रसार को अपना लक्ष्य बनाया था और वेद विरुद्ध मान्यताओं व विचारों का वह युक्ति, तर्क व वेद प्रमाणों से खण्डन भी करते थे।

आर्यसमाज की स्थापना ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने मुम्बई नगरी में 10 अप्रैल, सन् 1875 को की थी। इसके लिए उन्हें मुम्बई के प्रमुख आर्य पुरुषों ने प्रेरित किया था। ऋषि ने भी समाज की स्थापना पर अपनी सम्मति दी थी और वहां के सत्पुरुषों को सावधान भी किया था कि आर्यसमाज का संचालन विधि विधान के अनुसार योग्य पुरुषों द्वारा होना चाहिये। यदि इसमें व्यवधान हुआ तो परोपकार के इस कार्य से वह उद्देश्य पूरा नहीं हो सकेगा जिसके लिए वह समाज स्थापित किया जा रहा है। आर्यसमाज का उद्देश्य वही था जो ऋषि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द जी ने उन्हें प्रेरित किया था एवं ऋषि भी उस पर पूर्णरूपेण आश्वस्त थे। वह उद्देश्य यही था कि वेदों के प्रचार से समाज व विश्व से अज्ञान, असत्य व अविद्या को मिटाया जाये और उसके स्थान पर सत्य व विद्या से पूर्ण वैदिक मान्यताओं के अनुसार समाज, देश व विश्व को बनाया जाये। अविद्या जब दूर होती है तो मनुष्य ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित सभी कार्य पूर्ण ज्ञानपूर्वक करता है जिसमें कहीं किंचित अज्ञान व अन्धविश्वास की सम्भावना नहीं रहती। यदि सभी व अधिकांश मनुष्यों की अविद्या दूर हो जाये तो समाज व देश सुख का धाम बन सकता है। इसी कारण वेद विश्व को श्रेष्ठ वा आर्य बनाने का उद्घोष करते हैं।

आज संसार में अविद्या व्याप्त है। अविद्या इस कारण कि संसार के 90-95 प्रतिशत लोग वेद ज्ञान से अपरिचित होने के साथ ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप को नहीं जानते और न ही उन्हें कर्मफल व्यवस्था का ज्ञान है, न पुनर्जन्म के सिद्धान्त का और न ही जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य का पता है। वह यह भी नहीं जानते कि वह प्रतिदिन जो कर्म करते हैं उसका परिणाम उनके इस जीवन व मृत्यु के बाद क्या होगा? इन सब प्रश्नों के यथार्थ उत्तर देने और लोगों को असत्य मार्ग से हटाकर सत्य पर आरूढ़ करने के लिए ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की सथापना की थी। आर्यसमाज अन्य संस्थाओं की भांति कोई संस्था नहीं अपितु यह तो एक वेदप्रचार आन्दोलन है। एक ऐसा आन्दोलन जो इतिहास में पहले कभी किसी ने किया नहीं और न आर्यसमाज के अलावा किसी में करने की सामर्थय है। यह अविद्या वेदों के अध्ययन, स्वाध्याय व वेदाचार्यों के उपदेश से ही दूर हो सकती है। यही कार्य व इसका प्रचार आर्यसमाज करता है। आर्यसमाज ने अतीत में वेद प्रचार सहित सामाजिक सुधार व देशोन्नति के अनेक कार्य किये हैं। शिक्षा के प्रचार प्रसार में भी आर्यसमाज की अग्रणीय भूमिका है। सभी मत-मतान्तरों की अविद्या से भी आर्यसमाज ने सामान्यजनों को परिचित कराया है। लोगों को सच्ची ईश्वरोपासना एवं अग्निहोत्रादि करना सिखाया है। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जातिवाद वा प्रचलित जन्मना वर्णव्यवस्था, बालविवाह, सतीप्रथा आदि का आर्यसमाज विरोध करता रहा है और इन कार्यों में कहीं आंशिक तो कहीं अधिक सफलता भी आर्यसमाज को मिली है। छुआछूत आदि का भी आर्यसमाज विरोधी रहा है और आर्यसमाज के प्रचार से यह प्रथा भी कमजोर पड़ी है। आर्यसमाज ने आजादी के आन्दोलन में अनेक देशभक्त क्रान्तिकारी नेता व आन्दोलनकारी देश को दिये हैं। पं. श्यामजीकृष्णवर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल व शहीद भगत सिंह आदि ऋषि दयानन्द के साक्षात् अनुयायी, शिष्य व उनके परिवारों से ही थे।

ऋषि दयानन्द देश को अज्ञान, अविद्या व अन्धविश्वासों से पूर्णतया मुक्त करना चाहते थे। ऐसा होने पर ही यह देश संगठित होकर विश्व की महान अजेय शक्ति बन सकता था। देश की आजादी के बाद देश में जिन नीतियों का अनुसरण किया गया उसके परिणाम से देश दिन प्रतिदिन अविद्या में फसता जा रहा है और धार्मिक व सामाजिक दृष्टि से कमजोर हो रहा है। आज पहले से कहीं अधिक वेद प्रचार की आवश्यकता है परन्तु आज जिस प्रकार के योग्य प्रचारक विद्वानों व कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है उस कोटि के समर्पित भावना वाले विद्वान्, प्रचारक व कार्यकर्ता हमारे पास या तो हैं नहीं या बहुत ही कम हैं। वर्तमान में जिससे जितना भी हो सके उसे ऋषि के वेद प्रचार कार्य को तीव्र गति प्रदान करनी है। ईश्वर की कृपा होगी तो वेद प्रचार का कार्य गति पकड़ेगा और सफल भी होगा। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के वेद प्रचार के उद्देश्य, अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि तथा इसके साथ ही सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग का जो आन्दोलन किया था उसे हम जारी रखें और गति प्रदान करें। ईश्वर इस कार्य को सफलता प्रदान करें।

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून
196 चुक्खूवाला-2, देहरादून,
फोन : 9412985121

ओ३म्

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

हे प्रभो! आप हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलें।

# आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली –110060 का

# 67वां वार्षिकोत्सव

## शनिवार 30 मार्च 2019 से रविवार 07 अप्रैल 2019 तक

**सामवेदीय बृहद् यज्ञ** | **भजन** | **प्रवचन**

**महिला सम्मेलन** | **बाल सम्मेलन**

आपके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय सुख समृद्धि व कल्याण के विचारों को केन्द्र में रखते हुए प्रेरणादायक सरल व्याख्यान एवं भक्ति संगीत की शृंखला का आयोजन किया जा रहा है। इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाने तथा दुर्लभ मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने हेतु

**आप इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं !**

# आर्य महिला सम्मेलन

## शनिवार दिनांक 30 मार्च, 2019

## कार्यक्रम : समय – दोपहर 1:30 बजे से 5:30 बजे तक

| | | |
|---|---|---|
| यज्ञ ब्रह्मा | : | आचार्या प्रगति शास्त्री जी |
| ध्वजारोहण | : | श्रीमती सुशीला ग्रोवर जी, कृष्णा आहूजा जी । |
| ध्वजगान | : | आर्य समाज की बहनों द्वारा |
| मुख्य अतिथि | : | श्रीमती रचना विमल दुबे जी, श्रीमती चित्रा नाकरा जी । |
| मुख्य वक्ता | : | आचार्या कल्पना शास्त्री जी । *(विषय : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक नारी का योगदान)* |
| विशिष्ट अतिथि | : | श्रीमती शशि प्रभा आर्या, श्रीमती प्रकाश कथूरिया (प्रा. म. स. की प्रधाना) |
| स्वागत | : | उर्मिला आर्या, श्रीमती रचना आहुजा, (अ.प्रा.म.स. की महामंत्राणी) |
| विशेष आमंत्रित | : | डॉ. चन्द्रप्रभा शास्त्री, सुनीता पासी, सुधा वर्मा, निरुपमापुरी, सुषमा शर्मा, सुनीता बुग्गा, प्रोमिला घई, अनीता आर्या, सुशीला टंडन, अल्पना शर्मा |
| अध्यक्षीय भाषण | : | श्रीमती प्रतिभा जी |
| शुभकामनाऐं | : | श्रीमती प्रेमलता भटनागर |
| धन्यवाद | : | प्रधाना सावित्री शर्मा |
| संयोजक | : | ललिता कुमार, मंत्राणी |

शान्ति पाठ एवं प्रसाद वितरण

## गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा विभिन्न नाट्य कार्यक्रमः 31 मार्च 2019

### विषय वस्तु : राष्ट्रभक्ति की एक झलक

प्रातः 7 बजे : पंजीकरण सभी प्रतियोगियों द्वारा
प्रातः 8 बजे : बच्चों द्वारा सामूहिक यज्ञ
प्रातः 8:30 बजेः उद्घाटन एवं ध्वजारोहण, माननीय श्री प्रकाश तनेजा जी, श्री मुरली तहिलानी जी
अध्यक्षता : श्री सतीश मैहता जी
मुख्य अतिथि : माननीय डॉ. सुमित बजाज जी
श्री संजीव नरुला जी
विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री मनीष चोटानी जी, मृदुला चोटानी जी
श्री सुभाष गोयल जी (चैयरमेन, स्टिक ट्रेवल्स)
आशीर्वाद : श्रीमती उमा बजाज जी (चैयरमेन, श्री बद्रीनाथ बजाज मेमोरियल ट्रस्ट)

### ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम :

**प्रातः 9 से 11 बजे तक**

प्रातः 11 बजे से – धन्यवाद ज्ञापन एवं अल्पाहार
सौजन्य से : स्व. श्री द्वारकानाथ जी सहगल एवं माता वैष्णो देवी सहगल जी के सुपुत्र श्री अशोक सहगल जी, पुत्रवधू श्रीमती सुनीता सहगल जी के परिवार तथा विवेक सहगल इन्डस्ट्रीज़ की ओर से ।

**संयोजक**
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी
आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
9810884124

**सह-संयोजक**
श्रीमती आदर्श सहगल
सुनील आर्य
विकास मेहता
यज्ञपति उपाध्याय
राजीव वोहरा

नोट : अधिक जानकारी के लिए श्री अनिल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, दूरभाष नं: 25760006 पर सम्पर्क करें।

## दैनिक कार्यक्रम

(सोमवार 01 अप्रैल से शनिवार 06 अप्रैल तक)

### प्रातः कालीन सत्र

सामवेदीय बृहद् यज्ञ
प्रातः 6.15 से 8.00 बजे तक
यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी
वेद पाठी : आर्य समाज राजेन्द्र नगर के ब्रह्मचारीगण

### सायंकालीन सत्र

(01 अप्रैल सोमवार से 6 अप्रैल शनिवार तक)
भजन : सायं 7.00 से 8.00 बजे तक
श्री अंकित शास्त्री जी
वेद प्रवचन : रात्रि 8.00 से 9.00 बजे तक
1 अप्रैल से 3 अप्रैल तक : श्रीमती कल्पना शास्त्री जी
4 अप्रैल से 7 अप्रैल तक : आचार्य राजू वैज्ञानिक जी

### सायंकालीन प्रवचनों के विषय

| | |
|---|---|
| सोमवार 1 अप्रैल 2019 | राष्ट्र के निर्माण में हमारी भूमिका |
| मंगलवार 2 अप्रैल 2019 | जीवन में सुख प्राप्त करने के साधन |
| बुधवार 3 अप्रैल 2019 | आदर्श गृहस्थ जीवन |
| वीरवार 4 अप्रैल 2019 | ईश्वर का स्वरूप एवं स्तुति |
| शुक्रवार 5 अप्रैल 2019 | सत्संग क्या क्यों |
| शनिवार 6 अप्रैल 2019 | जीवन में धर्म की उपयोगिता |

प्रतिदिन रात्रि वेद प्रवचन के पश्चात् प्रीतिभोज की व्यवस्था है।

## पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

## रविवार 7 अप्रैल 2019

यज्ञ पूर्णाहुति : प्रातः 8:15 से 9:00 बजे तक
जलपान : 9:15 से 9:30 तक
ध्वजारोहणः 9:00 से 9:15 तक
भजनः 9:30 से 10:00 तक

## विशेष कार्यक्रम

**समय : 10:00 से 12:00 बजे तक**

अध्यक्षता : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी
मुख्य वक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार जी, आचार्य राजू वैज्ञानिक जी
मुख्य अतिथि : डॉ. अशोक चौहान जी, डॉ. आनन्द चौहान जी
विशिष्ट अतिथि : श्री रामनाथ सहगल जी, श्री अजय सहगल जी
पारितोषिक वितरण : 12:00 बजे से 12:30 बजे तक
धन्यवाद, शान्तिपाठ : श्री अशोक सहगल जी
ऋषि लंगर : 12:30 बजे
सौजन्य से : श्री बद्रीनाथ बजाज मेमोरियल ट्रस्ट, श्रीमती उमा बजाज जी, श्री राजकुमार बजाज जी एवं परिवार द्वारा

## –: निवेदक:–

अशोक सहगल (प्रधान) नरेन्द्र वलेचा (मन्त्री) सतीश कुमार (कोषाध्यक्ष), आर्य समाज राजेन्द्र नगर
सावित्री शर्मा (प्रधाना) ललिता कुमार (मन्त्राणी) आर्य स्त्री समाज, राजेन्द्र नगर
अमृत आर्या (प्रधाना) जनक चुघ (मन्त्राणी) आर्य स्त्री समाज (बहावलपुर) राजेन्द्र नगर
आदर्श सहगल (प्रधाना) जगदीश वधवा (मन्त्राणी) आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर
एवं समस्त सदस्य गण

# संगीत व वेद गायन से स्वस्थ रहें

वेद में स्त्रियों के लिए संगीत के नियमित प्रयोग का विधान किया गया है। वेद में संगीत के विभिन्न यंत्रों में उन यंत्रों का महिलाओं के लिए प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है, जिनका स्वर अत्यंत मधुर हो, जिन्हें सरलता से उठाया जा सके, अधिक भार वाले न हों। आकार में लम्बे, गोलादि यंत्र महिलाएँ अधिक पसंद करती हैं क्योंकि इनका प्रयोग उन्हें सरलता देता है किन्तु अत्यंत जटिल प्रकार के यंत्र वह बहुत कम ही प्रयोग करना पसंद करती हैं। लाटयायन सूत्र में तो स्पष्ट कहा गया है कि स्त्रियाँ साम तथा वीणादि संगीत प्ले यंत्रों का प्रयोग करें। इस हेतु इस प्रकार विधान किया गया है :-

**निधानायैव स्तोमीमं वाचं**
**विस्त्रीजेत्।**
**निधनं नाम पञ्चभी :**
**सप्तभिर्वा भागैरुपेतस्य समनो**
**अन्तिमो भागः ।**
**उपग्रहप्रभीतनि स्वरयंत उभेयुर्वे धर्म**
**उपयुक्ताः स्युः ।।**
**पत्नी च उपग्रहप्रभृतीनि**
**निधनान्युपेयादिति ।।**

यह मन्त्र स्पष्ट संकेत दे रहे हैं कि पत्नी अर्थात् प्रत्येक परिवार की महिलाएँ सामवेद के मंत्रों का स्वर सहित गायन करने के योग्य हो। उसे न केवल संस्कृत का ज्ञान हो, जिससे वेद को पढ़ने में उसे सरलता हो, अपितु सामवेद के सस्वर गायन करने में भी उसे कभी कठिनाई न आवे।

सामवेद के सम्बन्ध में हम जानते हैं कि यह वेद संगीत का वेद है। इसे स्वर के साथ ही गाया जाता है। इसे स्वर के साथ गाने के लिए संगीत के विभिन्न यन्त्रों का भी प्रयोग किया जाता है। इस वेद को मन्त्र में गायन का आदेश दिया है।

इस सबसे यह स्पष्ट होता है कि सामवेद पर महिलाओं को पूर्ण अधिकार होना चाहिए। महिलाओं की प्रवृत्ति तथा स्वर को परमपिता परमात्मा ने गायन के योग्य बनाया है। साधारणतया देखा गया है कि महिलाओं की आवाज़ में, उनके स्वर में कर्कशता नहीं होती और यदि किसी महिला के स्वर में कर्कशता आ भी जाती है तो यह बहुत कम होती है। इसलिए वेद ने गायन का अधिकार पुरुष से कहीं अधिक महिलाओं को ही दिया है। सामवेद गायन तथा गायन अथवा संगीत विद्या का महिलाओं को नियमित अभ्यास करने का आदेश वेद ने दिया है। इसलिए महिलाओं का वेद का आदेश स्वीकार करते हुए संगीत का नियमित प्रयोग करना चाहिए तथा सम्पूर्ण विधि से इसे सीखना चाहिए।

ताण्ड्य ब्राह्मण नामक ग्रन्थ में भी स्त्रियों के लिए संगीत पर बल देते हुए उनके लिए वीणादि संगीत के मधुर स्वर निकालने वाले यंत्रों के साथ गायन कराने तथा ऋत्विक कार्य कराने के लिए कहा गया है। इसका विधान भी 5.6.8 में स्पष्ट बताया गया है। यह विधान बताते हुए कहा है कि :-

**तं पत्नयो**
**अपघाटीलाभिरुपगायन्ति**
**आत्वींज्येनैव तत्।**
**पत्न्यः कुर्वन्ति सह**
**स्वर्गलोकमयानेति।।**

यहाँ भी स्त्रियों के संगीत सम्बन्धी ज्ञान का विस्तार देते हुए कहा है कि स्त्रियाँ संगीत में अपघातिला नामक वाद्य यंत्र का प्रयोग करें। संगीत के विभिन्न यंत्रों के साथ ही यह अपघातिला भी एक संगीत का यंत्र होता है। आजकल इस यंत्र का चाहे कुछ भी नाम हो किन्तु प्राचीन काल में इस यंत्र का नाम अपघातिला ही रहा है, जिसका प्रयोग संगीत गायन के समय करने के लिए स्त्रियों के लिए वेद ने आवश्यक माना है।

इनसे जो बात स्पष्ट होती है, वह है महिलाओं के लिए संगीत विद्या का ज्ञान आवश्यक होना है। इस ज्ञान का प्रयोग करते समय संगीत के विभिन्न वाद्यों की सहायता से वह संगीत का आनंद बढ़ावें। प्राचीन इतिहास पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो हमें पता चलता है कि हमारी महिलाएँ ही नहीं पुरुष भी संगीत विद्या में पारंगत होते थे तथा हमारे उस समय के राजाओं के आश्रयदाता के रूप में यह संगीत खूब पनपा । आज हम संगीत के कुछ दूर हुए हैं, इस कारण एकांत की पीड़ा से ग्रसित मानसिक रोगों के रोगियों की संख्या में भी निरंतर वृद्धि होती जा रही है। इस प्रकार की बीमारियों से बचने के लिए भी संगीत की आवश्यकता है क्योंकि जब संगीत का गायन करते हैं तो हमारी स्वर ध्वनि नाभि से चलकर शरीर के विभिन्न भागों से रमन करते हुए बाहर निकलती है। मार्ग में जितनी भी गन्दगी होती है, जितने भी व्याधियों के कीटाणु होते हैं, उन सबको यह स्वर ध्वनि बाहर निकाल कर हमें निरोग करती है।

इन सबके आलोक में हम संक्षेप में कह सकते हैं कि जीवन के एकांत क्षणों को दूर करने के लिए संगीत उपयोगी है। इससे कानों में जो मधुर स्वर ध्वनियाँ पड़ती हैं, उनसे आत्मिक शक्ति बढ़ती है और असीम आनंद प्राप्त होता है, मन का कमल खिल उठता है। इसके नियमित प्रयोग से हमारे शरीर की अनेक व्याधियाँ दूर होती हैं। हमने अपना जो समय बेकार की बातों में नष्ट करना था, उस समय को संगीत के प्रयोग से हम प्रफुल्लित कर सकते हैं तथा अनेक रोगों से अपनी रक्षा कर सकते हैं। इसलिए हम सबको विशेष रूप से हमारी महिलाओं को संगीत के माध्यम से वेद गायन का नियमित अभ्यास करना चाहिए।

**- डॉ. अशोक आर्य**
104, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी,
गाजियाबाद, मो. 9718528068

## गीत (नवसंवत् की बेला आई)

आगत का स्वागत अभिनन्दन,
और विगत की करें विदाई ।
नवसंवत् की बेला आई।।

नवल विचार-नवल कल्पना,
नवल रंगोली-नवल कल्पना,
नवल योजना-नव आशाएं,
नवल वर्ष मिल सभी मनाएं,
चेहरों पर आई अरुणाई ।
नवसंवत् .....

नव उल्लास, नवल उमंगे,
नवल नवल नवीन तरंगे,
नव उत्साह नवल आयोजन,
नवल मंच नवल संयोजन,
झूम उठे जिसमें तरुणाई।
नवसंवत् .....

नव आगत का स्वागत प्यारे,
नव आशाएं भविष्य संवारे,
कोई कार्य रहे न असम्भव,
मंगलकारी हो ये वर्ष नव,
पल-पल हो इसका सुखदाई ।
नवसंवत् .....

**-डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'**

## अनमोल रत्न अविस्मृत स्व. विवेक सहगल

जन्म - ७ जुलाई १९८० प्रयाण - १६ अप्रैल २००५

**निराशा के अंधेरे में ,**
**विपरीत परिस्थितियों के घेरे से ,**
**तुम बने प्रकाश पुंज ।**
**कर गये उजाला आत्म शक्ति का,**
**कर गये प्रदर्शित पथ कर्म शक्ति का ।**

आपकी पुण्य स्मृति को हम सब सामाजिक एवं पारिवारिक लोग याद करते हुए शत्-शत् नमन करते हैं।

## हम सबके प्रेरणास्त्रोत स्व. नेभराज आर्य जी

स्व. नेभराज आर्य जी की पावन पुण्य स्मृति में परिवारिक लोगों ने 20 मार्च 2019 को मिलकर के यज्ञ के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की आचार्य गवेन्द्र शस्त्री जी ने कहा श्री आर्य जी राष्ट्रभक्त एवं महर्षि दयानन्द जी के सिद्धातों पर चलकर उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का घर-घर पहुंचाने का कार्य किया। हम सबको भी उनकी पुण्य स्मृति से प्रेरणा लेनी चाहिये। आर्य समाज राजेन्द्र नगर की ओर से शत्-शत् नमन् !

### शोक समाचार : विनम्र श्रद्धांजलि

1. उर्मिल गुप्ता जी (पत्नी श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता जी) का निधन ।
2. आशा मदान (आर्य स्त्री समाज (बहावलपुर) राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की कोषाध्यक्षा का निधन
3. श्रीमती सुदर्शन गम्भीर जी, (माता श्रीमती संध्या भाटिया) राजेन्द्र नगर का निधन ।
4. श्रीमती प्रकाश गुलाटी जी का निधन । (माता सुधीर गुलाटी जी) राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

**इन सभी पुण्यात्माओं को आर्यप्रेरणा की ओर शत्-शत् नमन्**

# आर्य जगत की हल-चल

**1** आर्य समाज ग्रुप हाऊसिंग विकासपुरी नई दिल्ली द्वारा 6 अप्रैल से 13 अप्रैल 2019 तक वेद कथा का आयोजन किया गया है। समय : सायं 4 बजे से 6 बजे तक स्थान : एफ ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली यज्ञ के ब्रह्मा एवं वेद कथा वाचक आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, आचार्य अनिल शास्त्री जी, श्रीमती सुलक्षणा जी, योगेन्द्र शास्त्री जी के प्रवचन होगें।

– संयोजिका, श्रीमती उषा महाजन

**2** आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम द्वारा आर्य समाज रामनगर में पं. लेखराम का बलिदान दिवस मनाया गया। जिसमें दिल्ली से पधारे आर्य जगत के युवा वैदिक विद्वान् आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी का सार गर्भित प्रवचन हुआ एवं सहदेव सरस जी के मधुर भजनों का सभी ने आनन्द लिया कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री प्रभुदयाल चोटानी जी ने की।

– ओमप्रकाश चोटानी, प्रधान

**3 अमर शहीद पं. लेखराम जी के 122 वें बलिदान दिवस पर विचार गोष्ठी सम्पन्न।**

आर्य समाज करोल बाग नई दिल्ली के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव एवं अमर बलिदानी पं. लेखराम स्मृति व्याखान का आयोजन किया गया। जिसका विषय था- भारत की अंखडता राष्ट्रवाद में ही निहित है इस कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी एवं श्री अमोल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, श्री सुशील पण्डित जी, डॉ. रविकान्त जी का उद्धबोधन हुआ। – कीर्तिशर्मा

**आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली द्वारा संचालित (आर्य स्त्री समाज (बहावलपुर)**

सप्त दिवसीय वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें अथर्ववेदीय बृहद् महायज्ञ प्रसिद्ध वैदिक कर्मकाण्ड के विद्वान् आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया गया वेद प्रवचन प्रगति शास्त्री जी आयुषी शास्त्री जी अनिल शास्त्री जी ने वेद प्रवचनों के द्वारा सभी आर्यजनों को मन्त्रमुग्ध किया कार्यक्रम का संचालन अमृता आर्या जी (प्रधाना) ने किया। –जनक चुघ मंत्राणी

**आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न**

✣ आर्य स्त्री समाज के द्वारा 9 फरवरी 2019 शनिवार को यज्ञ के द्वारा वसन्त-पंचमी का उत्सव मनाया गया।

★ महर्षि दयानन्द जी का 195वाँ जन्मोत्सव शुक्रवार 1 मार्च 2019 को समारोह का शुभारम्भ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में हुआ एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

✣ महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं शिवरात्रि का कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने कहा महर्षि दयानन्द को बोध हुआ हमें कब बोध होगा ?

– नरेन्द्र मोहन वलेचा (मंत्री)

R.N. DEL BIL/2007/22120
DL (C)-14/1181/2011-2013

ओ३म्

महात्मा हंसराज जी के 19 अप्रैल जन्म दिन पर विशेष लेख

# महापुरुषों का स्तवन क्यों आवश्यक है।

सदियों से स्तुति का अर्थ मात्र गुण संकीर्तन ही लिया जाता है। जिस प्रकार मन्दिरों में ओ३म्, हरि, कृपानिधि आदि नामों से गुण संकीर्तन करके प्रभु के भक्तजन अपने कर्त्तव्य की इतिश्रीमान लेते हैं, इसी प्रकार अपनी-अपनी जाति तथा अपने-अपने क्षेत्र के महापुरुषों का गुणानुवाद करके ही उनके अनुयायी जन आत्मसन्तुष्ट तथा आत्मसंतृप्त हो जाते हैं। जबकि स्तुति का निहितार्थ कुछ और ही है। इसको जानने के लिए सत्यार्थ प्रकाश का सप्तम समुल्लास विशेषतः पठनीय है। इस समुल्लास का प्रतिपाद्य विषय वेद तथा ईश्वर है- 'स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव को सुधारना है। पुनः सगुण निर्गुण स्तुति परक विस्तृत व्याख्या के उपरान्त स्तुति विषय का उपसंहार करते हुए लिखते हैं - "जो केवल भाड़ के समान परमेश्वर के गुण कीर्त्तन करता जाता और अपने चरित्र को नहीं सुधारता उसकी स्तुति करना व्यर्थ है। "स्तुति शब्द का यह गूढ़ अभिप्राय भारतवर्ष में सहस्रों वर्षों से लुप्त था और आज भी प्रायः लुप्त ही है। प्रभु की तथा महापुरुषों की ऐसी स्तुति करने वाले भक्तजन **"आश्चर्यवत् पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद् वदति तथैव चान्यः।"** आश्चर्यवत् ही उपलब्ध होते हैं। इस विवेचना से स्पष्ट है कि हमें अपने महापुरुषों में प्रीति उत्पन्न करने हेतु ही उनका गुणस्तवन नहीं करना चाहिए। अपितु उनके गुणों को धारण करके अपने को तद्गुणवान् बनाने का भी प्रयत्न करना चाहिए। अस्तु।

डी.ए.वी. संस्था को अपने जीवन का अर्घ्य देने वाले महात्मा हंसराज जी अनेक गुणों के मूर्त्तिमान रूप थे। भगवद्गीता में बताई गई स्थितप्रज्ञता के अनेक लक्षण उनके अन्दर विद्यमान थे। स्थितप्रज्ञता की परिभाषा करते हुए गीता में कहा गया - "जो व्यक्ति कर्तव्य पालन में आए दुःखों से उद्विग्न नहीं होता, भोगैश्वर्यों में आसक्त नहीं होता और आसक्ति के अभाव में तज्जन्य राग, द्वेष क्रोध, भय आदि से दूर रहता है वह स्थितप्रज्ञ है, योगी है।" युद्ध क्षेत्र में मोहासक्त अर्जुन को दिया गया यह उपदेश सिद्ध करता है कि निर्जन एकान्त कुटीर में ब्रह्म का ध्यान लगाना ही मात्र योग नहीं, अपने-अपने कर्त्तव्य पालन में एकाग्र होकर लगे रहना भी योग है। महात्मा हंसराज जी के जीवन में अनेक प्रसंग ऐसे आए जब उन्होंने स्थित प्रज्ञता का परिचय दिया। एक प्रसंग यहाँ प्रस्तुत है - फरवरी 1914 में महात्मा जी के पुत्र बलराज जी की राजद्रोह के अपराध में गिरफ्तारी हुई और सात वर्ष की कैद की सजा दी गई। आपकी पत्नी पुत्र के छूटकर आने की प्रतीक्षा करते-करते मुकदमे के बीच में ही मृत्यु को प्राप्त हो गई। नौजवान पुत्र की कैद, पत्नी की मृत्यु, आजीवन आर्थिक सहायता का संकल्प लेने वाले बड़े भाई मुल्खराज का निमोनिया ग्रस्त होना। चार महान् संकटो से ग्रस्त होने पर भी महात्मा जी विचलित नहीं हुए। वे आर्यसमाज की सेवा यथावत् करते रहे। उत्सवों पर बाहर जाते रहे और निश्चिन्त मुद्रा में लोगों से मिलते रहे। ऐसी स्थितप्रज्ञता आसाधारण लोगों में ही प्राप्त होती है। तपोनिष्ठ महात्मा जी के जीवन का अद्भुत प्रसंग है दयानन्द एंग्लो वैदिक संस्थान की सेवा में निःशुल्क समर्पण। एक व्यक्ति धनवान् तथा साधनसम्पन्न होने पर किसी संस्था की निःशुल्क आजीवन सेवा का व्रत ले यह आश्चर्य तो है पर परम आश्चर्य नहीं परन्तु निर्धन तथा साधनहीन होने पर यह संकल्प लेना निःसन्देह महान् आश्चर्यजनक है। आज महात्मा जी ने अपने जीवन में वह संकल्प लेकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। उनके जीवन की यह घटना सभी को रोमांचित कर देती है। वे चाहते तो बी.ए. उत्तीर्ण होने के कारण ऊँची सरकारी नौकरी पर कही भी प्रतिष्ठित हो सकते थे। किन्तु लाहौर में महर्षि दयानन्द के दर्शनों से अत्यन्त प्रभावित होने के कारण उन्होंने लौकिक पद-मान-प्रतिष्ठा सबको तिलांजलि देकर गुरुदेव स्वामी दयानन्द की भाँति आर्यसमाज तथा डी.ए.वी. कॉलेज को अपना समग्र जीवन समर्पित कर दिया। हम महात्मा हंसराज जी के इन महनीय गुणों को अपने जीवन में चरितार्थ करने का प्रयास करें और अपने जीवन को धन्य बनाएँ।

विद्या-विलास-मनसो धृत-शील-शिक्षाः,
सत्यव्रता रहित-मान-मलापहासाः
संसार-दुःख-दलनेन सुभूषिता ये, धन्या
नरा विहित-कर्म-परोपकाराः।।

-डॉ. प्रियम्वदा वेद भारती
गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, उ.प्र.

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के तत्वावधान में भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित

महर्षि दयानन्द सरस्वती

67वां वार्षिकोत्सव
शनिवार 30 मार्च से रविवार 7 अप्रैल 2019 तक

स्वागतकर्त्ता :

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली की ओर से

आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में सभी आर्यों का स्वागत एवं अभिनन्दन।

अशोक सहगल
प्रधान

नरेन्द्र मोहन वलेचा
मंत्री

सतीश कुमार
कोषाध्यक्ष

Printed and published by **Sh. N.M. Walecha** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. ***Editor :*** **Achariya Gavender Shastri**